International Journal of Sanskrit Research 2016; 2(1): 13-14

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2016; 2(1): 13-14
© 2016 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 18-11-2015
Accepted: 16-12-2015

राकेश कुमार
(शोधछात्र) राष्ट्रिय संस्कृत संस्थानम्
नवदेहली

Correspondence
राकेश कुमार
(शोधछात्र) राष्ट्रिय संस्कृत संस्थानम्
नवदेहली

मनुस्मृति में षोडश संस्कार

राकेश कुमार

भूमिका, मनुस्मृति का रचनाकाल, संस्कार शब्द का प्रतिपाद्य विषय, उपसंहार भूमिका–

भारतीय धर्मशास्त्र साहित्य में कल्पसूत्रों की चार विधाओं – 1. श्रौतसूत्र, 2. गृहासूत्र 3. धर्मसूत्र 4. शुल्वसूत्र इत्यादि के अनन्तर स्मृति – साहित्य का स्थान आता है व अर्थात् धर्मसूत्रों के उपरांत मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति, बृहस्पति स्मृति, नारद स्मृति, पराशर स्मृति एवं देवल स्मृति आदि स्मृतियों का प्रणयन हुआ। स्मृति शब्द का प्रयोग 'श्रुति' (वेद) से परवर्ती साहित्य प्रदर्शित करने के लिए किया गया है। [1] स्मृति साहित्य में प्रमुख स्मृतियां 18 मानी गई है जिनके नाम क्रमशः मनुस्मृति, बृहस्पति स्मृति, प्रचेता स्मृति, शातातप स्मृति, पराशर स्मृति, सम्वर्त स्मृति, उशनस स्मृति, शंख लिखित स्मृति, अति स्मृति, विष्णु स्मृति, आपस्तम्ब स्मृति हरीत स्मृति आदि है। [2]

प्राचीन काल में मनु, याज्ञवल्क्य आदि ने इस समस्त भूमण्डल की नैतिकता सांस्कृतिकता एवं इसकी व्यावहारिकता का जो विस्तारपूर्वक वर्णन अपने ग्रन्थों में किया है, उन्हें ही स्मृति नाम से जाना जाता है।

मनुस्मृति को समस्त स्मृतियों का मूल माना गया है, क्योंकि मनुस्मृति सभी स्मृतियों में सबसे अधिक प्राचीन है। वेदों में भी मनु का उल्लेख है ऋग्वेद में मनु को पिता के रूप में स्वीकार किया गया है और मनु के यज्ञ का संकेत करते हुए रूद्र की स्तुति भी की गई है। [3] वेदों के अतिरिक्त संहिताओं में भी मनु का उल्लेख किया गया है, तैतिरीय संहिता एवं ताण्डय महाब्राह्मण में मनु के वचनों को औषधी के समान माना गया है। [4]

महाभारत में मनु को स्वायंभुव की संज्ञा दी गई है तथा यह भी कहा गया है कि मनु को बह्मा ने एक लाख श्लोकों में धर्म का उपदेश दिया। [5] मनु के विषय में संस्कृत साहित्य में अधिक विस्तार के साथ वर्णन किया गया है। मनु के विषय में कहा गया है कि

'परम्परानुसार मनु मूल रूप से वैवस्वत, स्वाम्भुव एवं सावर्णि से सम्बन्धित है। मनु सूर्य के पुत्र थे। इसी कारण यह वैवस्वत हुए। स्वयं उत्पन्न होने से स्वायम्भुव कहलाये। [6]

मनुस्मृति का रचनाकालः

मनुस्मृति के रचनाकाल के उचित कालनिर्धारण में मतैक्य नहीं है। मनुस्मृति का कालनिर्धारण अन्तः एवं बाह्म साक्ष्यों पर आधारित है। कुछ विद्वान मनुस्मृति को महाभारत से प्राचीन मानते है तो कुछ मनुस्मृति को महाभारत के पश्चात् की रचना स्वीकार करते है। परम्परावादी भारतीय विद्वानों ने मनुस्मृति को वेद सदृश प्रमाण माना है। वेद में मनु के विधान का ही विधान विवरण नहीं है उसके पालन का उल्लेख भी है। [7] यास्क ने निरूक्त में व्यवहार शास्त्र प्रणेता के रूप में मनु का उल्लेख किया है। [8]

जैमिनीसूत्र के भाष्यकार शबरस्वामी ने भी मनुस्मृति का उल्लेख किया है इनका समय 500 ई. पूर्व माना जा सकता है। [9] बृहस्पति ने भी मनुस्मृति की प्रशंसा की है। बृहस्पति का काल भी 500 ई. ही माना गया है। अन्तः एवं ब्रह्म साक्ष्यों को आश्रय मानकर मनुस्मृति का रचनाकाल ईसा एवं दूसरी शताब्दी एवं ईसा उपरान्त दूसरी शताब्दी के मध्य स्वीकार किया जा सकता है।

सम्पूर्ण मनुस्मृति बारह अध्यायों में विभक्त है, बारह अध्यायों में सृष्टि की उत्पत्ति, धर्म की परिभाषा तथा विवेचन, संस्कार विधि, ब्रह्मचारी के कर्तव्य, गृहस्थाश्रम का वर्णन, भक्ष्य एवं अभक्ष्य पदार्थों का निर्णय, वानप्रस्थ कर्तव्य, राजधर्म, राजनैतिक एवं सामाजिक व्यवस्था, पति–पत्नी के कर्तव्य, दाय भाग, चारों वर्णों के कर्तव्य विभिन्न पापों का प्रायश्चित वैदिक कर्म की श्रेष्ठता और मोक्षप्राप्ति का वर्णन किया गया है। मनुस्मृति के द्वितीय अध्याय में संस्कार विधि का वर्णन किया गया है। [10]

संस्कार का शब्द प्रतिपाद विषय

सम् उपसर्गपूर्वक 'कृ' धातु से 'घञ्' प्रत्यय लगाने से संस्कार शब्द निष्पन्न होता है जिसका अर्थ है

वह धार्मिक किया कलाप जो मानव को सुसंस्कृतज्ञ बनाते है। संस्कार मनुष्य के सम्पूर्ण जीवन को पवित्र बनाते है इसलिए गर्भधान अतिरात्र तथा आप्तोर्याम। [11]

व्यास और शंख ने सोलह संस्कार बताए है मनुस्मृति में तेरह संस्कारों का उल्लेख है। संस्कारों की संख्या के बारे में मतैव्य नहीं है। किन्तु संस्कारों के महत्व एवं प्रमुखता को ध्यान में रखते हुए, प्रायः धर्मशास्त्रकार ने 16 महत्वपूर्ण संस्कारों को निर्धारित किया है।

(1) गर्भाधान (2) पुसंवन (3) सीमन्तोन्नयन (4) जातकर्म (5) नामकरण (6) निष्क्रमण (7) अन्नप्राशन (8) चूड़ाकर्म (9) कर्णबोध (10) विद्यारम्भ (11) उपनयन (12) वेदारम्भ (13) केशान्त (14) समावर्तन (15) विवाह (16) अन्त्येष्टि ।

(1) गर्भाधान संस्कारः यह संस्कार श्रेष्ठ सन्तान उत्पन्न करने के लिए किया जाता है।

(2) पुसंवन संस्कारः पुंसवन का शाब्दिक अर्थ है पुत्र प्राप्ति की इच्छा व्यक्त करना। यह संस्कार गर्भधान संस्कार के द्वितीय या तृतीय मास में होता है। इस अवसर पर दाम्पत्ति द्वारा पुत्र की प्राप्ति के लिए देवताओं की स्तुति तथा कुछ औषधियों का प्रयोग किया जाता है।

(3) सीमन्तोन्नयनः इस संस्कार को करने का मुख्य लक्ष्य गर्भवती स्त्री को प्रसन्न करना है और सब मिलकर अच्छी सन्तति हेतु ईश्वर से प्रार्थना करते है।

(4) जातकर्मः यह बाल्यास्वथा का पहला संस्कार है मनु के अनुसार नाभिभेदक के पहले जातकर्म किया जाता था। घी तथा मधु का गृह्मोक्त मन्त्रों से नवोत्पन्न शिशु का प्राशन कराया जाता था।

(5) नामकरणः हिन्दू संस्कृति में इस संस्कार को बहुत महत्तव देते है।

दशम्यामुत्थाय पिता का नाम करोति।

अर्थात् पिता ही बालक का ग्यारहवें दिन सुन्दर नामकरण करे। मनुस्मृति के अनुसार नाम सार्थक होना चाहिए।

(6) निष्क्रमणः इस अवसर पर सन्तान को जन्म के बाद पहली बार घर से बाहर निकाला जाता है। मनु ने बालक का निष्क्रमण संस्कार प्रायः तीसरे और चौथे मास से बताया है।

चतुर्थे मासे कर्तव्यं शिशोर्निष्क्रमणं गृहात्।। [12]

(7) अन्नप्राशनः यह संस्कार शिशु के छटे मास में कराया जाता है। इस संस्कार के द्वारा उसे अन्न दिया जाता है।

षष्ठे अन्नप्राशनं मासि यद्वेष्ठं मंगलं कुले।

(8) चुड़ाकर्मः इसे केशच्छेदन संस्कार भी कहते है। धर्मशास्त्रों के अनुसार संस्कार भक्ति के लिए दीर्घ आयु, सौन्दर्य तथा कल्याण की प्राप्ति ही संस्कार का प्रमुख प्रयोजन है। मनु ने इसे प्रथम या तृतीय वर्ष में सम्पन्न करना उचित बताया है।

(9) कर्णबोधः इसे यज्ञोपवीत संस्कार भी कहते है। इस संस्कार के सम्पन्न होने पर ही बालक द्विज कहलाता है। 'उप' अर्थात् 'समीप', नयन ले जाया जाना अर्थात् विद्या प्राप्ति के निमित गुरू के पास ले जाया जाना शाब्दिक अर्थ है।

(10) विद्यारम्भः यह संस्कार तीसरे या पांचवे वर्ष में किया जाता है कानों के बींधने से अनेक रोगों की रक्षा होना सुश्रुत सहिंता में वर्णित हैः

(11) उपनयनः शिशु के मस्तिष्क शिष्य ग्रहण करने योग्य हो जाने पर उसकी शिक्षा का आरम्भ विद्यारम्भ संस्कार में साथ किया जाता है।

(12) वेदारम्भः वेदारम्भ संस्कार में गुरू शिष्य को वेद की शिक्षा देता है। मनु के मत में यज्ञोपवीत के उपरान्त गुरू को शिष्य को वेद पढाना चाहिए। वेदारम्भ और अन्त में शब्द का उच्चारण करना चाहिए।

(13) केशान्तः सोलहवें वर्ष में ब्रह्माण का बारहवें वर्ष में क्षत्रिय का तथा चौबीसवें वर्ष में वैष्य का कशान्त संस्कार किया जाना चाहिए। इस संस्कार में ब्रह्माचारी की दाढी मूछों का जो तरूण होने का लक्षण है सर्वप्रथम क्षौर किया जाता था।

(14) समावर्तनः मनु के अनुसार विद्याध्ययन की समसप्ति पर समावर्तन संस्कार किया जाता है। इस संस्कार के समय शिष्य गुरू को गुरूदक्षिणा के रूप में यथाषक्ति धन स्वर्ण भूमि वस्त्र आदि जो भी सम्भव हो दे सकता है।

(15) विवाहः इस संस्कार द्वारा ब्रह्माचर्य आश्रम से गृहस्थाश्रम में प्रवेष होता है। यहां से व्यक्ति का समाजीकरण होकर उसके उतरदायित्वपूर्ण व्याक्तित्व का प्रारम्भ होता है। मनु ने विवाह आठ प्रकार के कहे है ब्राह्मा दैव आर्ष प्राजापत्य असुर गान्धर्व राक्षस तथा पैषाच विवाह।

(16) अन्त्येष्टिः मनु ने इसे अन्तिम संस्कार माना है। यह संस्कार मृत्यु के पश्चात किया जाता है जिससे मरने के बाद आत्मा को शान्ति मिल सके।

निष्कर्षः

इस समस्त अध्ययन से कहा जा सकता है कि लगभग दो सहस्त्र वर्षा से पूर्व मनुस्मूति में जो संस्कार निर्धारित किए गए थे आज बाध्य जीवन में प्रायः सभी कुछ परिवर्तित हो जाने पर भी उसमें से बहुत कुछ प्रासंगिक है।

गर्भधान संस्कार आज धार्मिक दृष्टि से नही तो इसका परिवर्तित रूप परिवार नियोजन की दृष्टि से प्रासंगिक है। समावर्तन संस्कार आज अपने मूल रूप से अप्रासंगिक हो गया है किन्तु वह परिवर्तित रूप में आज भी प्रचलित है क्योंकि समावर्तन सम्पन्न करके ही युवक गृहस्थ आश्रम का दायित्व ग्रहण करता है। शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त विधार्थी आज भी गुरू से अनुमति प्राप्त करने के स्थान विश्वविद्यालय या अपने प्रशिक्षण सस्थान आदि से प्रमाण पत्र रूपी अनुमति लेकर प्राप्त करके विवाह करता है।

जीवन में षोडश संस्कारों की मुख्य महता को दर्शाया है। इस प्रकार यह कहना समुचित होगा कि संस्कारों की योजना व्यक्ति के जीवन को नियमबद्ध करने के लिए की गई है। इन संस्कारों के द्वारा व्यक्ति को भौतिक और आध्यात्मिक उन्नति का अवसर मिलता था।

(शोध संदर्भ ग्रन्थ) पादटिप्पणी

1. वसिष्ठ धर्मसूत्र (4.1) श्रुतिस्मृतिविहितो धर्मः।।
2. वैरमित्रोदय परिभाषा प्रकाश, पृ. 18
3. ऋग्वेद, 8.30.3
4. ताण्डय. 23.16.17
5. महा शान्ति., 21.12,57.45
6. मनुस्मृति में राजतन्त्र, पृ. 42
7. ऋग्वेद, 8.30.3
8. निरूक्त, 3.3
9. धर्मशास्त्र का इतिहास, प्रथम खण्ड, पृ. 46
10. वर्तमान काल में मनुस्मृति की प्रसाडि.गता, पृ. 59
11. गौतम, 8.3
12. मनु 2.3४